

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री राहु देव नमः ॥

श्री राहु स्तोत्रम्

Rahu Stotram — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: महर्षि वेदव्यास (स्कन्द पुराण) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः॥ १॥

भावार्थ: श्री राहु देव दानवों के प्रमुख मंत्री व नीति-निर्माता हैं तथा माता सिंहिका के हृदय को आनंदित करने वाले प्रिय पुत्र हैं। वे अर्धकाय (केवल मस्तक वाले स्वरूप) से सुशोभित हैं, निरंतर अत्यंत उग्र व क्रोधी स्वभाव वाले हैं तथा सूर्य और चंद्रमा का मान-मर्दन करने वाले (उन्हें ग्रसकर ग्रहण लगाने वाले) हैं।

श्लोक २

रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः॥ २॥

भावार्थ: वे अत्यंत रौद्र (भयानक) रूप वाले, देवाधिदेव महादेव शिव जी के परम प्रिय भक्त, दैत्य कुल के प्रतापी वीर तथा 'स्वर्भानु' नाम से विख्यात हैं। वे साक्षात सूर्यदेव को भी भयभीत करने वाले, नवग्रहों में अत्यंत प्रभावशाली ग्रहराज, समुद्र मंथन में अमृत का पान करने वाले तथा पूर्णिमा की पावन तिथि पर चंद्र-अमृत के आस्वादन की अभिलाषा रखने वाले हैं।

श्लोक ३

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः॥ ३॥

भावार्थ: जिनकी दृष्टि और स्वरूप साक्षात काल (समय व मृत्यु) के समान अमोघ व तीक्ष्ण है, जो नीलकंठ भगवान शिव के हृदय में स्थान पाने वाले अनन्य आश्रित हैं, जो चंद्रमा को संतापित करने वाले 'विधुंतुद' हैं, माता सिंहिका के तेजस्वी पुत्र 'सैंहिकेय' हैं तथा घोर-गंभीर रूप और असीम पराक्रम से युक्त महाबली हैं।

श्लोक ४

ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥ ४॥

भावार्थ: जो प्रतिकूल स्थिति में होने पर ग्रह-पीड़ा उत्पन्न करने वाले, तीक्ष्ण दाढ़ों वाले, रक्तवर्ण (लाल) विशाल नेत्रों वाले तथा विशाल उदर वाले हैं—राहु देव के इन पच्चीस दिव्य नामों का जो भी मनुष्य श्रद्धापूर्वक नित्य स्मरण व पाठ करता है...

फलश्रुति

यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥ ५॥

भावार्थ: जो भी व्यक्ति इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके जीवन की समस्त महान पीड़ाएं, असाध्य व्याधियां और ग्रह-दोष केवल स्मरण मात्र से नष्ट हो जाते हैं। राहु देव की कृपा से उसे निरोगी काया (आरोग्य), श्रेष्ठ संतति (पुत्र-पौत्र), अतुलनीय ऐश्वर्य, विपुल धन-धान्य और समस्त सांसारिक संपत्तियों की प्राप्ति होती है।

फलश्रुति

ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः॥ ६॥

भावार्थ: इस उत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ करने वाले साधक को राहु देव स्वयं सभी मनोवांछित फल प्रदान करते हैं। जो मनुष्य निरंतर निष्ठापूर्वक इसका पाठ करता है, वह समस्त अकाल मृत्यु और दुर्घटनाओं के भय से मुक्त होकर सौ वर्षों (शतायु) की सुखी व संपन्न दीर्घायु को प्राप्त करता है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं समय:** राहु स्तोत्र का पाठ आरंभ करने के लिए **शनिवार** अथवा **बुधवार** का दिन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। समय के संदर्भ में, **संध्याकाल (सूर्यास्त के बाद गोधूलि बेला)** अथवा **रात्रिकाल** में इसका पाठ सर्वाधिक प्रभावशाली और फलदायी होता है।
- **दिशा एवं आसन:** पूजा के समय अपना मुख **दक्षिण** अथवा **पश्चिम** दिशा की ओर रखें। ऊन अथवा कुश के स्वच्छ काले, नीले या भूरे रंग के पवित्र आसन पर बैठें।
- **वस्त्र एवं स्वच्छता:** स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ नीले, गहरे रंग के अथवा साधारण धुले हुए स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- **दीपक एवं सुगंध:** राहु देव के निमित्त **सरसों के तेल** अथवा **तिल के तेल** का चौमुखा या एकमुखी दीपक प्रज्वलित करें। वातावरण में लोबान, गुग्गल या चंदन की धूपबत्ती जलाएं।
- **नैवेद्य एवं अर्पण:** पूजा में काले तिल, साबुत उड़द, नीले या काले पुष्प अर्पित करें। संभव हो तो गुड़ या मीठी पूरी का भोग लगाएं।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **महापीड़ा और असाध्य व्याधियों का समूल निवारण:** स्तोत्र के पांचवें श्लोक में स्वयं वेदव्यास जी उद्घोष करते हैं — *'यः पठेन्महतीं पीडां तस्य नश्यति केवलम्'*. जो साधक इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसकी बड़ी से बड़ी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक महापीड़ा राहु देव की कृपा से सहज ही नष्ट हो जाती है।
- **आरोग्य, संतान और अतुलनीय ऐश्वर्य की प्राप्ति:** फलश्रुति की पंक्ति स्पष्ट करती है — *'आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा'*. राहु दोष की शांति होते ही व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, गुणवान संतान, अपार धन-संपत्ति तथा समाज में मान-सम्मान की प्राप्ति होती है।
- **अकाल मृत्यु के भय से मुक्ति और शतायु जीवन:** छठे श्लोक में वचन दिया गया है — *'सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः'*. इस पावन स्तोत्र का निरंतर पाठ करने वाला मनुष्य किसी भी प्रकार की अकाल मृत्यु, दुर्घटना, विष-भय और तांत्रिक बाधाओं से सुरक्षित रहकर सौ वर्षों तक पूर्णायु जीवन जीता है।
- **कालसर्प दोष और ग्रहण दोष की संपूर्ण शांति:** स्तोत्र में राहु देव को *'कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः'* कहा गया है। भगवान शिव की छत्रछाया में स्थित होने के कारण, राहु स्तोत्र का पाठ करने से कुंडली में बनने वाले कालसर्प योग, गुरु-चांडाल दोष और सूर्य-चंद्र ग्रहण दोष के समस्त दुष्प्रभाव शांत हो जाते हैं।
- **मानसिक भ्रम और अज्ञात भय का नाश:** राहु देव के *'सिंहिकाचित्तनन्दनः'* और *'स्वर्भानु'* स्वरूप का ध्यान करने से चित्त की चंचलता, अनिद्रा, बुरे स्वप्न और अनावश्यक भय दूर होकर बुद्धि कुशाग्र और निर्णय लेने की क्षमता अचूक बनती है।